पद ३६ (राग: खमाज – ताल: धुमाळी)

आलिया। पुरवितो मनोरथा।।१।।

प्रभु तो आहे समर्थ। कां करितां चिंता व्यर्थ।।ध्रु.।। त्यागुनि गृह

सुत कांता। सर्वहि संचित हो निज अर्था। मनोहर म्हणे शरण